त्रिगुण शिवजी की आरती

जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरुड़ासन बृषवाहन साजे॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमालाधारी।
चंदन मृगमद सोहे भोले शुभकारी॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥
श्वेतांबर पीतांबर बाघंबर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥
कर के मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्ता जगभर्ता जगपालनकर्ता॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥
काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दी ब्रह्मचारी,
नित उठि भोग लगावत महिमा अति भारी॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥
त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावे॥
ॐ जय शिव ओंकारा... ॥